International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-08-2021, Accepted: 31-08-2021, Published: 16-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 36-38

उच्च–शिक्षा के क्षेत्र में कोरोना के दुष्प्रभाव

डॉ. गायत्री शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), चमेलीदेवी इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज़, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
चीन के वुहान से निकलकर दुनिया के कोने–कोने में तबाही मचाने वाला कोरोना वायरस पौराणिक कथाओं के किसी दानव से कम नहीं है। कोविड–19 वायरस के रूप में यह एक ऐसा महादानव है, जिसके आगे अत्याधुनिक चिकित्सा तंत्र भी हार मानता सा प्रतीत होता है। देश और दुनिया की रफ्तार पर ब्रेक लगाने वाले कोरोना ने चिकित्सा तंत्र के साथ ही देश के उच्च शिक्षा–तंत्र के लिए भी अनगिनत चुनौतियों का अंबार खड़ा कर दिया है। कोरोना संक्रमण दर बढ़ने का काल शिक्षकों व छात्रों दोनों के लिए इंतजार व मुश्किलों का वो लंबा दौर था, जो आज भी जारी है। शैक्षणिक सत्र के आरंभ में छात्रों से गुलज़ार रहने वाले कॉलेज परिसर आज टकटकी लगाए छात्रों की चहलकदमी का इंतजार कर रहे है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कोरोना से उपजी चुनौतियों ने नवीनतम तकनीक के रूप में जहां हमें निराशा में भी आशा व उम्मीद की राह दिखाई है, वहीं इन तकनीकों के दुष्परिणामों के फलस्वरूप हम कई प्रकार की शारीरिक व मानसिक रूग्णता के भी शिकार भी हो गए है।

मूलशब्द: उच्च शिक्षा, कोरोना, कॉलेज, कोरोना के दुष्परिणाम

प्रस्तावना
विकास और सभ्यता के नवीन सोपानों पर कदम रखने के लिए शिक्षा की आवश्यकता किसी भी देश के नागरिकों के लिए महती है। शिक्षा किसी भी व्यक्ति की मौलिक आवश्यकता है। कहते है यदि आपको किसी भी देश को आर्थिक व सामाजिक रूप से कमजोर करना है तो उसका सबसे बेहतर तरीका है उस देश के उच्च शिक्षा–तंत्र को कमजोर करना। शिक्षा–तंत्र के कमजोर होते ही वह देश अवनति और पतन की ओर अग्रसर होता जाएगा। कोरोना ने देश की चिकित्सा शिक्षा, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों को इस कदर प्रभावित किया है कि इन क्षेत्रों में कोरोना से हुई भरपाई को पूरा करने में आगामी कई वर्षों का समय लगेगा। श्रृंखलाबद्ध तरीके से एक से अनेक में इस वायरस के बहुगुणित होने की प्रवृत्ति कोरोना की भयावहता को आमजन में और अधिक बढ़ाती है।

कोरोना या नोवेल कोरोना वायरस की शुरूआत तो सामान्य सर्दी–जुकाम से होती है किंतु इसकी त्वरितता मानव के श्वसन तंत्र को असामान्य तरीके से प्रभावित कर चंद ही पलों में उसका मौत से साक्षात्कार करा देती है। दिसंबर 2019 में चीन के वुहान से चलकर भारत के कोने–कोने में मौत का तांडव मचाने वाले कोरोना वायरस के बदलते स्वरूपों ने देश के उच्च शिक्षा–तंत्र को पूरी तरह से चरमराकर रख दिया है। उच्च शिक्षा में जिस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा आईआईटी, आईआईएम व देश के कई अन्य शीर्षस्थ संस्थान करते थे, कोरोना के चलते उनकी शिक्षण प्रणाली में 'गुणवत्ता' शब्द का लोप होकर उसका स्थान 'औपचारिकता' ने ले लिया है। यही ऑफलाइन और ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली में बड़ा फर्क है, जिसमें व्यवहारिक ज्ञान व्यवहारिकता से परे औपचारिक व किताबी ज्ञान बनकर सिमट जाता है। कोरोना के दौर में इस देश ने वो सबकुछ देखा, सुना और महसूस किया, जो पहले कभी नहीं किया था। अस्पतालों व शमशानों में लाशों का अंबार लिए आई कोरोना की पहली लहर, दूसरी लहर और अब इनसे इतर अलग–अलग वैरिएंट में विविध लक्षणों वाली तीसरी लहर। आज स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, कचहरी सब लगभग बंद सा है। पिछले दो वर्षों से अब तक बदस्तूर चलने वाला ये वो मुश्किल दौर है, जिसमें हम आज़ाद होते हुए भी डर व अलगाव के साये में ज़िंदगी जी रहे है।

उच्च–शिक्षा के क्षेत्र में कोरोना से उपजी चुनौतियां
कॉलेज वह स्थान है, जहां की दुनिया, माहौल व शिक्षण प्रणाली आदि स्कूलों से बेहद अलग होती है। कॉलेज में विद्यार्थियों के नियमित छात्र के तौर पर प्रवेश लेने का प्रमुख कारण शिक्षकों के मार्गदर्शन में कॉलेज में उपस्थित होकर पढ़ाई करना होता है। कॉलेज में नियमित अर्थात् ऑफलाइन अध्ययन के लिए प्रवेश लेना और पढ़ाई ऑनलाइन करना विद्यार्थियों व शिक्षकों दोनों के लिए परेशानी का सबब बन रहा है। इनमें से जो जहां है वहीं से वह क्लास लेने व क्लास अटेंड करने की औपचारिकता को पूर्ण कर रहा है।

वर्षभर छात्रों की चहलकदमी, सांस्कृतिक आयोजनों, खेलकूद, शोर–शराबा, छात्र राजनीति व छात्रों की उपस्थिति से गुलज़ार रहने वाले कॉलेजों ने कोरोना–काल में ऐसा सन्नाटा देखा, जिसमें कॉलेजों के भव्य व सुंदर परिसर में पक्षियों की चहचहाहट तो थी, ताजा स्वच्छ हवा भी थी और स्वच्छता भी थी, पर ऐसे खुशनुमा मौसम में भी वहां छात्रों की कमी खलती नज़र आ रही थी। वायरस का संक्रमण फैलने के भय के माहौल में भी कुछेक लोग कॉलेज परिसर में चहलकदमी करते नज़र आते है और ये वो लोग है, जो कोरोना के डर से मास्क व फेस शील्ड में मुंह छुपाते घुम रहे है। इससे भी आगे यदि इनका बस चले तो ये कोरोना के भय से खुली हवा में सांस लेने से भी गुरेज कर ले। वास्तविकता यही है कि अब कोरोना का खौफ लोगों में इस कदर घर कर गया है कि इस वायरस के संक्रमण से बचने के लिए कई पालकों ने अपने बच्चों के भविष्य का एक या दो साल बर्बाद करना स्वीकार कर लिया किंतु कोरोना काल में अपने बच्चों का प्रवेश किसी भी कॉलेज में नहीं कराया।युवाओं में अधिकांश का दोनों डोज़ का वैक्सीनेशन नहीं होने से भी पालक अपने बच्चों को कॉलेज भेजने को लेकर असहमत व असमंजस में है। अब तो यही लगता है कि आगामी कुछ माह तक कोरोना के कारण यही स्थिति बदस्तूर कायम रहेगी। कोरोना–काल में कॉलेज में नवीन प्रवेश व छात्रों की संख्या कम होने से उसकी

भरपाई के फलस्वरूप कई शैक्षणिक संस्थानों द्वारा शिक्षकों के वेतन में कटौती व शिक्षकों की छंटनी की गई। ऐसे में शिक्षकों व छात्रों दोनों के भविष्य को कोरोना संक्रमण ने बुरी तरह से या यूं कहे कि पूरी तरह से प्रभावित किया है। कोरोना की पहली व दूसरी लहर का संक्रमण के बढ़ने का दौर वो मुश्किल वक्त था, जिसमें कई कॉलेजों के लिए कोर्स के लिए आवंटित सीटों को बचा पाना, मान्यता मापदंडों पर खरा उतरना, कॉलेज संचालन हेतु पूंजी निकाल पाना और प्रवेश के समय छात्रों से किए गए वादे पूरे कर पाना बहुत मुश्किल रहा। ऐसे में कई संस्थान कोरोना काल में शुरू ही नहीं किए गए या बंद कर दिए गए।

ज़िंदगी में बदलाव की दस्तक हम सभी को सुहाती है। स्कूल से निकलकर कॉलेज की ज़िंदगी बचपन से लड़कपन के दौर में प्रवेश का खुशनुमा पल होता है, जिसका स्वप्न हर छात्र स्कूल के दिनों से ही देखना आरंभ कर देता है। उम्र के साथ ही छात्र जीवन में करियर का भी निर्धारक मोड़ कॉलेज ही होता है। कोरोना के मामले बढ़ने का खामियाजा कॉलेज में प्रवेश लेने वाले और कॉलेज छोड़ने वाले दोनों ही छात्रों के लिए कठिनाइयों से भरा रहा। कॉलेज में अंतिम वर्ष में पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए कोरोना उनकी ऑफलाइन परीक्षा के स्वप्न, ट्रेनिंग, कैंपस प्लेसमेंट आदि कई उम्मीदों पर पानी फेर गया। इसके ठीक विपरीत कोरोना के साये में अपने स्कूल का इम्तेहान देने वाले वे छात्र इस वर्ष कॉलेजों में कदम ही नहीं रख पाए, जो कॉलेज में अपने दोस्तों की टोली के साथ पढ़ाई व मौज–मस्ती के इरादे से जाना चाहते थे। कड़ी पाबंदियों के चलते उनका कॉलेज में वेलकम भी ऑनलाइन हुआ और शिक्षकों से परिचय भी ऑनलाइन हुआ।

अक्सर हमारे घर के बड़े–बुर्जुग कहते है कि पढ़ाई करते समय मोबाइल, टीवी और भोजन को अपने से दूर रखना चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कल तक हम जिन मोबाइल फोन से पालक बच्चों को दूर रखना चाहते थे, वो मोबाइल फोन ही कोरोना काल में बच्चों के शिक्षक, साथी या यूं कहे कि दैनिक जरूरत बन गए है। खाते–जागते, सोते–उठते हर वक्त मोबाइल का साथ होना और उस पर नज़रे गड़ाए रखना शिक्षकों व छात्रों दोनों के लिए आज विवशता बन गया है। जिनके पास अपना स्वयं का मोबाइल है, वे छात्र खुशनसीब है। किंतु इससे ठीक विपरीत कई ऐसे छात्र भी है, जो आर्थिक रूप से संपन्न नहीं है। स्वयं का मोबाइल न होने से ऐसे छात्रों के लिए कोरोना काल बेहद मुश्किल दौर रहा है।

ऑनलाइन क्लास के लिए बच्चों को ऑनलाइन होना भी जरूरी है और ऑनलाइन होने के लिए मोबाइल में नेट का रिचार्ज होना भी जरूरी है। ऐसे में आर्थिक तंगी के चलते बमुश्किल पालक घर के एक मोबाइल में ही नेट पैक रिचार्ज करा पाते है। यहां त्याग बच्चों के साथ ही उनके माता–पिता को भी करना पड़ता है। ऑनलाइन क्लास के लिए माता–पिता को न चाहते हुए भी अपना मोबाइल बच्चों के हाथों में थमाना पड़ रहा है। दुविधा तो तब होती है, जब किसी घर के दो बच्चों की एक ही समय पर ऑनलाइन क्लास होती है तो ऐसे में एक के भले के लिए उन दोनों में से किसी एक को अपनी क्लास का त्याग करना पड़ता है।

शिक्षा जगत में कोरोना काल के दुष्परिणामों के फलस्वरूप कम आय वाले परिवारों के बच्चों के ऑनलाइन पढ़ाई से वंछित होने के अधिक आसार थे क्योंकि वे पर्याप्त डिवाइस या इंटरनेट नहीं खरीद सकते थे। ऐतिहासिक रूप से कम संसाधनों वाली शिक्षण संस्थानों ने, जिनके छात्र पहले से ही शिक्षा संबंधी बड़ी बाधाओं का सामना कर रहे थे, ने डिजिटल सीमाबद्धताओं के समक्ष अपने छात्रों को पढ़ाने में विशेष कठिनाइयों का सामना किया। शिक्षा प्रणाली अक्सर छात्रों और शिक्षकों के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल रही है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि छात्र और शिक्षक इन तकनीकों का सुरक्षित और आत्मविश्वास के साथ उपयोग कर सके।[2]

नेशनल सैंपल सर्वे के शिक्षा से जुड़े 75वें चरण के आंकड़े बताते हैं कि देश में केवल 24 प्रतिशत घरों में ही इंटरनेट की सुविधा है। इनमें से 42 फीसदी शहरी क्षेत्रों में हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों के केवल 15 प्रतिशत घरों में इंटरनेट की सुविधा है। वहीं देश के केवल 11 प्रतिशत घरों में कंप्यूटर हैं। (23 प्रतिशत शहरी घरों में कंप्यूटर हैं, तो गांवों में केवल 4.4 प्रतिशत घरों में अपने कंप्यूटर हैं। इसमें स्मार्टफ़ोन को शामिल नहीं किया गया है।) आईएएमएआई की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस समय लगभग 50 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ता है। इनमें से 43.3 करोड़ उपभोक्ता 12 साल की आयु से ज़्यादा के है और 65 प्रतिशत पुरुष है। ग्रामीण और शहरी, पुरुषों और महिलाओं के बीच के इस डिजिटल अंतर को अन्य बड़े विश्वविद्यालयों सर्वे भी सही बताते हैं। हैदराबाद यूनिवर्सिटी के एक सर्वे के अनुसार केवल 37 प्रतिशत छात्रों ने कहा कि वो ऑनलाइन क्लास ले सकते हैं। वहीं 90 प्रतिशत छात्रों ने क्लास में लेक्चर लेने को तरज़ीह देने की बात कही। यहां तक कि देश के बड़े तकनीकी संस्थानों यानी की आईआईटी के दस प्रतिशत या इससे भी अधिक छात्रों ने कहा कि वो स्टडी मटेरियल को डाउनलोड नहीं कर सकते हैं या वो ऑनलाइन क्लास नहीं ले सकते हैं। छात्रों ने इसकी वजह कभी तो कनेक्टिविटी और कभी अपर्याप्त डेटा प्लान बताई।[1]

मोबाइल और इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग व कोरोना ने छात्रों को परिवार से दूर और इंटरनेट की ऑनलाइन दुनिया के इतना करीब ला दिया है कि अब बच्चों के पास अपने परिवार के साथ बिताने के लिए समय ही नहीं है। मोबाइल व लैपटॉप के माध्यम से इंटरनेट की दुनिया में हर दिन गहरे गोते लगाने वाले बच्चे अब भले ही शिक्षा में अव्वल और नवीनतम तकनीक के ज्ञाता बन रहे है लेकिन इसके ठीक विपरीत ऑनलाइन क्लासों के कारण कई शारीरिक समस्याओं का सामना भी इन छात्रों को कोरोना काल में करना पड़ रहा है। सिरदर्द, तनाव, मांसपेशियों में दर्द, दृष्टिदोष आदि कई ऐसी शारीरिक समस्याएं है, जिनका सामना आजकल छात्र कर रहे है। समग्र रूप से कहे तो कोरोना के चलते ऑनलाइन के पढ़ाई के चलन ने बच्चों को बाहरी दुनिया से दूर करते हुए उन्हें अनेक शारीरिक समस्याओं से ग्रसित भी कर दिया है।

ऑनलाइन क्लास के लिए माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली जूम या गूगल मिटिंग छात्रों को एक ऐसी दुनिया में प्रवेश कराती है, जो हाइटेक तो है पर उसमें अधिकांशतः संवाद एकतरफा है, उसमें समय की कड़ी बंदिशे है व एडमिन के आदेशों से बंधे रहने का बंधन भी। ऑनलाइन क्लास में एडमिन अर्थात् शिक्षकों के हाथों में आपको क्लास में एडमिट, डिसमिस, म्यूट, अनम्यूट व ब्लॉक करने जैसे कई विकल्प है, जो आपको इस ऑनलाइन माध्यम पर भी कड़ी बंदिशों में बांधे रखते हैं। तकनीकी, विज्ञान, मेडिकल आदि कई ऐसे क्षेत्र है, जिसमें ऑनलाइन के स्थान पर ऑफलाइन शिक्षण ही सार्थक है लेकिन मजबूरी और वक्त के इशारे ने हमें वो सब भी सीखा, जो वक्त की दरकार थी।

कोरोना की तीसरी लहर फिर से देश में अपना कहर बरपाने को आमदा है। जिसके चलते पुनः लॉकडाउन लगने के डर के चलते कई कॉलेज संचालक, छात्र व पालक असमंजस की स्थिति में है। 'टीमलीज एडटेक' कंपनी ने देश में 700 विद्यार्थियों और 75 विश्वविद्यालयों में अग्रणी छात्रों के बीच सर्वेक्षण किया ताकि उन्हें शिक्षा में हुए नुकसान का पता लगाया जा सके। इस सर्वे के नतीजों के अनुसार कॉलेज जाने वाले छात्रों को लगता है कि कोविड–19 के कारण उन्हें शिक्षा में 40 से 60 फीसदी का नुकसान हुआ है। सर्वे में कहा गया है कि शिक्षा में यह नुकसान जी–7 देशों में आंकलित शिक्षा नुकसान से दोगुना है। शिक्षा में

नुकसान मुख्यतः पांच कारकों के कारण हुआ है– डिजिटल डिवाइस, सरकारी संस्थानों में सुस्त प्रशासन, पहले से मौजूद क्षमता में कमी, अधिकतर देशों की तुलना में लंबा लॉकडाउन और कमजोर ऑनलाइन अध्ययन/अध्यापन विषय–वस्तु। 'टीमलीज एडटेक' के सीईओ शांतनु रूज ने कहा है कि भारत में 3ण्5 करोड़ विश्वविद्यालय छात्र है, जबकि दुनियाभर में यह संख्या 22ण्2 करोड़ है। पहले से मौजूद कई चुनौतियों के कारण कोविड–19 और भी संकटपूर्ण रहा है।[3]

निष्कर्ष

हर त्रासदी और आपदा हमें कुछ न कुछ सिखाती है और कोरोना नामक आपदा भी हमें यह सिखाती है कि हमें अपने देश का विकास अपने लोगों की आवश्यकताओं और देशज विचारों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। इसके लिए जरूरत है कि हमारी शिक्षा प्रणाली, हमारे समाज और समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए, न कि केवल वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुरूप होनी चाहिए।[4] ज़िंदगी और मौत के बीच फासला सांसों का है। इस फासले को मिटाकर एक ही झटके में करोड़ों ज़िंदगियों को मौत के दर्शन कराने वाले कोरोना ने हमें समय से पूर्व महामारी प्रबंधन का एक गूढ़ सबक सिखलाया है। आने वाले वर्षों में न केवल कोरोना बल्कि जलवायु परिवर्तन व अन्य प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक आपदाएं देश के विकास के मार्ग में अवरोध बनेगी लेकिन इनसे जीतने के लिए हमें पूर्व तैयारी करके इन्हें हराना सीखाना होगा। महामारी की मार से सुरक्षा के लिए सर्वप्रथम हमें देश के चिकित्सा व उच्च शिक्षा–तंत्र को सशक्त करना होगा और इनमें समयानुकूल तथा यथोवांछित परिवर्तन करने होंगे। आज का युवा देश का भविष्य निर्माता है और किसी भी देश का भविष्य तभी बेहतर बन सकता है, जब उस देश का उच्च शिक्षा–तंत्र मजबूत और रोजगारोन्मुखी हो। आज जरूरत है उच्च शिक्षा नीति को वर्तमान परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाते हुए शिक्षकों को ऑनलाइन व ऑफलाइन शिक्षण के नवीन तरीकों से संपन्न बनाने की।

टिप्पणी

1. प्रस्तुत लेख में तकनीकी शब्दावली के कुछ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया, जो विषय के स्पष्टीकरण हेतु आवश्यक है।
2. यह लेख मेरा मौलिक व अप्रकाशित लेख है।
3. नवीनतम जानकारियों के लिए यथोचित संदर्भ इंटरनेट से लिए गए है।

संदर्भ

1. https://www.jagran.com/blogs/svsingh/lockdown-effect-on-education-system/
2. https://www.hrw.org/hi/news/2021/05/17/378673
3. https://www.tv9hindi.com/knowledge/govt-talks-about-covid-19-impact-on-education-from-primary-to-secondary-745572.html
4. https://zeenews.india.com/hindi/special/coronavirusthe-role-of-education-and-the-need-for-self-sufficiency-during-the-crisis/668141